بِسْجِلِللهِ الرَّحْمِنِ الرَّحِيثِمِ

AL-QURAN THE CRITERION



INTERNATIONAL
ISLAMIC PROPAGATION
CENTRE CANADA

अल-कुरआन क्या कहता है

मरयम के बारे में

संकलक: मुहम्मद शेख #अब्दल्लाह #क्रआनकाबशर

24 अगस्त 2009 को IIPC कनाडा द्वारा प्रकाशित



यह इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर कनाडा का एक पंजीकृत ट्रेडमार्क है



म्हम्मद शेख को शेख अहमद दीदात द्वारा 1988 में डरबन ,दक्षिण अफ्रीका के IPCI दवारा आयोजित दावा और तुलनात्मक धर्म पर प्रशिक्षण लेने के लिए चना गया था। इस दावा और तलनात्मक धर्म प्रशिक्षण के परा होने पर महम्मद शेख[े]को IPCI दॅवारा एक प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया था जिसे स्वयं माननीय शेख अहमद दीदत ने प्रस्तृत किया था



दान करें :-

शीर्षक:-इन्टरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेन्टर कनाडा 7060 मकलाउघलीं रोड, मिससीससाउगा ONL5W1W7 कनाडा

बैंक का नाम- TD CANADA TRUST

www.themuslim500.com

अकाउंट नम्बर:5042218 टांसिट नम्बर- 15972 कनाडा IBAN - 026009593

स्विफ्ट कोड:TDOMCATTTOR इंसटीट्यूशन नम्बर- 004 शाखा का नम्बर:1597 (अमेरिका से दान देने वालों के लिए) ABA026009593

132 मैन ST साउथ, रॉकवुड, ON NOB 2KO ,कनाडा 1-800-867-0180



अभी पंजीकरण करें





सोशल मीडिया नेटवर्क

You Tube



facebook



Available on the App Store



Google play



Instagram



ÉTV

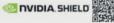




ROKU





















mi Mi Box



acloco















meand









पुस्तिका का परिचय

पुस्तिका के बारे में यह मुहम्मद शेख द्वारा संकलित एक व्याख्यान संदर्भ प्स्तिका है यह हर विषय के व्याख्यान के अनुसार है इस पुस्तिका का उददेश्य पाठक को क्रआन के विषय से परिचित कराना है। इसका अध्ययन स्वयं किया जा सकता है और यह हर विषय के वीडियो व्याख्यान को भी पूरा करता है जो इसके ही साथ होता है। वीडियो व्याख्यान में चर्चा के अनुसार इस पुस्तिका में विषय से संबंधित आयत (क्रआन की आयतें) हैं। व्याख्यान के बाद प्रश्न उठाए जाते हैं, और उनके उत्तर आयत द्वारा दिए जाते हैं। वीडियो व्याख्यान और उनके व्याख्यान संदर्भ प्स्तिकाएं हमारी वेबसाइट www.iipccanada.com पर उपलब्ध हैं। यहां दिए गए क़ुरआन के संदर्भ संपूर्ण नहीं हैं, लेकिन विषय का मूल सार प्रस्त्त करते हैं। इस प्रकाशन में जिन संदर्भों को बाहर रखा गया है, उन्हें किसी भी अच्छी सहमति का उपयोग करके शोध किया जा सकता है और यह पता चलेगा कि इस प्रकाशन में पेश किया गया चयन पूरे अन्क्रम में सामंजस्य स्थापित करेगा। यह आशा की जाती है कि मुस्लिम(आज्ञाकारी) पाठक इन आयतों को अपने अरबी पाठ के साथ याद करेंगे और अपने मित्रों और सहयोगियों को दावत (इस्लाम का प्रचार) में संलग्न करेंगे, और अपनी सलाह/प्रार्थना में भी इसे पढ़ सकेंगे। इस तरह, प्स्तिका रोज़मर्रा की ज़िंदगी में म्स्लिम के लिए एक उपयोगी उपकरण बन जाती है - इंशाअल्लाह। आयत का अन्वाद मुहम्मद शेख ने किया है। विषय के संबंध में किसी भी प्रश्न, टिप्पणी या सुझाव का ईमेल के माध्यम से किया जा सकता है: info@iipccanada.com

AL-QURAN THE CRITERION



मुहम्मद शेख के बारे में

मुहम्मद शेख इस्लाम और तुलनात्मक धर्म पर एक सार्वजनिक वक्ता हैं। उनके व्याख्यान कुरआन के पाठ पर आधारित हैं जो कई गलत धारणाओं को दूर करने, प्रामाणिक इस्लामी

मान्यताओं को प्रस्तुत करने और कुरआन के अपने आंतरिक सब्त के आधार पर तर्कसंगत और उद्देश्य विश्लेषण के लिए अपील करने का काम करते हैं। राजनीतिक या सांप्रदायिक पक्ष लिए बिना, वह लोगों को यह समझने और विश्लेषण करने के लिए कहते है कि कुरआन सबसे पहले किसी विषय के बारे में क्या कहता है, क्योंकि यह कुरआन है जो इस्लाम का प्रमुख आधिकारिक पाठ और अल्लाह/भगवान का वचन और मानव जाति के लिए स्पष्ट सच्चाई है। मुहम्मद शेख को कराची पाकिस्तान से शेख अहमद दीदत द्वारा 1988 में IPCI डरबन दिक्षण अफ्रीका द्वारा आयोजित दावाह और तुलनात्मक धर्म पर प्रशिक्षण से गुजरने के लिए चुना गया था। इस दावाह कोर्स के पूरा होने के बाद मुहम्मद शेख को IPCI से एक प्रमाण पत्र प्रदान किया गया था जिसे स्वयं माननीय शेख अहमद दीदात ने प्रस्तुत किया था।

AL-QURAN THE CRITERION

INTERNATIONAL
ISLAMIC PROPAGATION

IIPC-इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर के बारे में

इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर (IIPC) एक दावाह संगठन है जिसका उद्देश्य अल-कुरआन अल्लाह/भगवान की पुस्तक को

बढ़ावा देना है, IIPC की स्थापना 1987 में मुहम्मद शेख द्वारा कराची, पाकिस्तान में की गई थी। हालाँकि IIPC का वर्तमान स्थान एक पंजीकृत धर्मार्थ संगठन के रूप में रॉकव्ड, कनाडा में है। यह म्हम्मद शेख दवारा दिए गए व्याख्यानों के माध्यम से अल-कुरआन को समझने और सराहना करने के लिए सभी धर्मों और आस्था रखने वाले लोगों को आमंत्रित करता है, और यह आयोजन, मुद्रित प्रकाशनों इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रोडक्शंस, इंटरनेट टीवी द्वारा प्रसारण और इसकी वेबसाइट के माध्यम से जनता तक पहंचने का प्रयास करता है। केंद्र अल-इस्लाम को अल्लाहं/भगवान की आयत(निशानी) के आधार पर अपने प्राचीन रूप में प्रचारित करने का प्रयास करता है ताकि आम जनता मुफ्त में सीखने की सामग्री के माध्यम से अपनी गतिविधियों से लाभान्वित हो सके और वक्ता के साथ सीधे परामर्श करे अपने दैनिक जीवन में अल-क़्रआन के अभ्यास और समझ के बारे में। केंद्र का कोई राजनीतिक या सांप्रदायिक संबदधता नहीं है और यह केवल एक धर्मार्थ आधार पर फि-सबील अल्लाह चलाया जा रहा है। हम सभी मुसलमानों से अल्लाह/भगवान के लिए हमारे साथ हाथ मिलाने का अनुरोध करते हैं और दावाह के हमारे मिशन को समर्थन करने का अनुरोध करते हैं (यानी दुनिया की जनता के लिए अल-इस्लाम का निमंत्रण देने के लिए)

अल- कुरआन से हमारा सिद्धांत

याद करो जब अल्लाह/भगवान
ने उन लोगों से, जिन्हें किताब
प्रदान की गई थी, वचन लिया
था कि उसे लोगों के सामने
भली-भाँति स्पष्ट करोगे उसे
छिपाओगे नहीं।" किन्तु उन्होंने
उसे पीठ पीछे डाल दिया और
थोड़ी कीमत पर उसका सौदा
किया कितना बुरा सौदा है
जो ये कर रहे है!

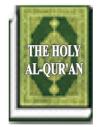
आल-ए-इमरान 3:187

पढ़!

अपने रब/भगवान के नाम के साथ अल-क़्रआन अल्लाह/भगवान की किताब

अल-कुरान से 6237 में से सिर्फ दो आयतें।

और हमने
कुरआन को नसीहत
के लिए अनुकूल
और सहज बना
दिया है। फिर क्या
है कोई नसीहत
करनेवाला?



क्या वे कुरआन में सोच-विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह/भगवान के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी बेमेल बातें पाते। 4:82

[54:17]

- *मानवता की घोषणा
- *दया और बुद्धि का झरना।
- *लापरवाह के लिए एक चेतावनी।
- *भटके हुए के लिए एक मार्गदर्शक।
- *संदिग्ध के लिए एक आश्वासन।
- *कष्ट के लिए एक धीरज।
- *निराश लोगों के लिए एक आशा।

अश-शूरा 42

49.अल्लाह/भगवान ही के लिए
आसमानों और ज़मीन की
बादशाहत है। वह जो चाहे पैदा
करता है जिसे चाहता है मादा
प्रदान करता है। और जिसे
चाहता है नर प्रदान करता है।

50.या नर और मादा को जोड़
देता है। और जिसे चाहता है
बांझ/बे ओलाद बना देता है।
निश्चित ही वह इल्म/ज्ञान
रखने वाला, कुदरत/मूल्यांकन
रखने/करने वाला है।

ٱلشُّوْرِي ٤٢

رلله مُلْكُ السَّمْوْتِ وَالْاَرْضِ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَا ثَا وَيُهُبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَا ثَا

> ٲۏؽؙڒؙۊؚڂٛۿؙؠٝۮؙڬٛڒٳػٵۊٙٳڹٵؿؖٵ ۅؘؽڿۘۼڵؙڡٞڹؿۺٵۼٛٶڨؽڴٵ ٳٮ۬ۜڬۘۼڸؽؙؗؗؗڟؙۊڔٮٛٷۣ۞

शब्दों के माने/अर्थ

بَّمَال - عَال عَلَيْ عَالَ اللهِ عَالَ اللهِ عَالَ اللهِ عَالَةُ اللهِ عَالَ اللهُ عَالَ اللهُ عَالَ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلِي عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ عَلَيْكِمِ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْعِلَى عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْكِمِ عَلَيْكِمِ عَلَيْعِلَى عَلَيْكُمِ عَلَيْكُمِ عَلَيْعِلَمِ عَلَيْعِلْعِلْمِ عَلَيْكُمِ عَلَيْكُمِ عَلَيْكُمِ عَلَيْكِمِ عَلَيْكُمِ عَلَيْكُ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُوا عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلِيْكُمُ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمُ عَلِي عَلَيْكُ

मादा - أُنْثَىٰ

दो जिन्सी/दुव्लिंगी (HERMAPHRODITE)

*ऐसा फर्द/शख्श जिसमें नर और मादा के अन्दरुनी और बाहरी शारीरिक आजा/अंग हों। (Ref: Webster unabridged dictionary Page no.665) (Ref Textbook of medical jurisprudence and toxicology page 35)

*दो जिन्सी/द्विलंगी

ऐसी हालत में बाहरी जननांग दोनों लिंगों के हो सकते हैं और आंतरिक जननांग अंडाशय और वृषण दोनों से मिलकर बने हो सकते हैं। ऐसी हालत को दो जिन्सी कहते हैं। उसकी बुनयादी/मूल जिन्स/लिंग तो आमतौर पर मादा होती है लेकिन ये नर भी हो सकता है। लेकिन इस तरह की हालत बहुत कम होती है।

मरयम के सिफाती/गुण नाम

मरयम का नाम अल-कुरआन में 34 बार आया है।

हिन्दी	अरबी	सूरह/आयत नंबर
वह आयत/निशानी है।	اْيُةً	अल-मोमिन्न23:50
वह आज्ञापालन करने वालों मे से थी।	مِنَالُقْذِتِيْنَ	अत-तहरीम 66:12
अल्लाह/भगवान ने उसको चुना और पाक किया।	اَللهُ اصْطَفْلْكِ وَطُهُ رَكِ	अल-ए-इमरान 3:42
अल्लाह/भगवान ने उसमें अपनी रूह/सार /सारांश फूंकी (यानी नफ्सयात/मनोभाव में)	ڤٽڠڂؙڬٳڣؽۿٳ ڡؚڽؙڒؖٷڿؚڬٳ	अल- अंबिया 21:91
अल्लाह/भगवान ने उसमें अपनी रूह/सार/ सारांश फूंकी(यानी उसकी शर्मगाह में)	فَنَفُخْنَافِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا	अत-तहरीम 66:12
उसने अल्लाह/भगवान के शब्दों और किताबों को सच कर दिखाया।	ۉڝؙۘۘۘؗڷۊؿ ؠڲڶؠ۠ۻڗؘڒؾۿٵ ٷٞڷؿ۠ڽ؋	अत-तहरीम 66:12

महत्वपूर्ण बात:-इब्ने मरयम/मरयम का बेटा अल-कुरआन में 23 बार आया है।

आल-ए-इमरान 3

35.जब इमरान की पत्नी
(यानी मरयम की विलदाह/माँ)
ने कहा ऐ मेरे रब/पालनेवाले
निश्चित ही मैंने जो कुछ मेरे
कोख/गर्भ में है उसे आज़ाद
करते हुए तेरे लिए वक्फ/अर्पित
किया, बस मुझसे क़बूल कर
ले, निश्चित ही तू सुनने
वाला, जानने वाला है।

36.बस जब उसने उसको जन्म
दिया तो उसने कहा कि ऐ
मेरे रब/पालनेवाले मैंने तो
मादा को जन्म दिया है।
अल्लाह/भगवान ज़्यादा जानता
है जिसके साथ उसने जन्म
दिया, और नर मादा की तरह
हरगिज़ नहीं हो सकता, और
निश्चित ही मैंने उसका नाम
"मरयम" रखा है, और निश्चित
ही मैं उसको और उसकी संतान
को तेरी पनाह/शरण में देती हूँ
शैतान रजम हुए से।

ال عِمْرِنَ ٣

ٳۮ۬ۊؘٵڵؾؚٵڡؗٛڒٳؾؙۼڵۯڹ ۯؾؚٳڹؽؙڹۮؙۯڎؙڮٛ ڡٳڣٛڹؙڟڹؽؙۼؙػڒٞڒٵڣۜؾؘۺڵڡؚڹٚؽ ٳٮٞ۠ڰٳڹٛؾٵڵڛۧؠؙؿؙٵڶؙۘػڸؽؙۄٛ

فَلَمَّا وَضَعَثُهَا قَالَتُ رَبِّ إِنِّ وَضَعَثُمَّ أَنْثَىٰ وَاللَّا اُعْلَمُ بِمَا وَضَعَتُ الْنَثَىٰ وَلَيْسَ الذَّكُوكَ الْأُنْثَىٰ وَإِنِّ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ مِنَ الشَّيْطِنِ الرَّحِيْمِ قَوْرُ رِّيَتَهَا مِنَ الشَّيْطِنِ الرَّحِيْمِ قَ

महत्वपूर्ण बात:-

- 1.ज़ुरीयत/संतान लफ्ज़ (31) बार आया है मुज़क्कर/नर के साथ।
- 2.ज़ुरीयत/संतान लफ्ज़ (1) बार आया है मरयम के साथ।
- 3.जुरीयत/संतान (4) बार।
- 4.ज़ुरीयत/संतान (32) बार।

अल-अंबिया 21

89.और जब ज़करिया ने अपने रब/पालनेवाले को पुकारा ऐ मेरे रब/पालनेवाले मुझे अकेला मत छोड़ देना और तू बेहतरीन वारिसों/में से है।

आल-ए-इमरान 3

42.और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम निश्चित ही अल्लाह/भगवान ने तुझे चुन लिया और तुझे पाक किया और तुझे जहानों/संसारों की औरतों पर चुन लिया।

43.ऐ मरयम अपने रब/पालनेवाले की आज्ञापालन कर और सजदा कर, और झुकने वालों के साथ झुक जा।

ٱلْأَنْبِيَآءِ ٢١

ۉڒڲڔؾٙٳڋٛڹٵڋؽڔؾۜڬ ۯٮؚۘڵٳؾؘۮڔ۫ؽ۬ڡٛۯؖٵ ٷٙٳؽؙؿڂؽۯٳڶۅٝڔؿؚؽؽؖ

ال عِمْزِنَ ٢

ۅٙٳۮ۬ۊؘٵڷؾؚٵڵؠۘڵڵٟڲڎؙڸؠۯؘؽٟۄؙ ٳڹٞٳٮڵڎٳۻڟڣٮڮؚٷٟڟؠۜۯڮ ۅٳۻڟڣٮڮؚٷڸڹٮٵ؞ؚؚٳڷۼڶؠؘؽ

> ؽ۬ٮؙۯؙؿؙٳڡٞڹؙؿڶڔڗڸڮؚۉٳۺؙڮڔؽ ۘۅٳۯڲۼؽڡؘۼٳڶڗ۠ڮۼؽڹ[ٛ]

आल-ए-इमरान 3

44.वह ग़ैब/अनुपस्थित की
पेशनगोइयों/भविष्यवाणियों में
से है जिसकी हमने तेरी तरफ
वही/प्रेरणा की। और तू उनके
पास नहीं था जब वह अपने
कलम डाल रहे थे(यानी ऐसा
घेरा जिसमें किसी को हिफाज़त
के लिए रखा जाए) कि मरयम
की परविरेश कौन करेगा और
तू उनके पास नहीं था जब
वह झगड़ रहे थे।

37.बस उसके रब/पालनेवाले ने उसे अच्छी तरह क़ब्ल किया। और उस (मरयम) की बड़ी अच्छी तरबियत हुई/उगाया, और ज़करिया ने उसकी किफालत/परवरिश की. जब भी जकरिया उसके पास मेहराब/कक्ष में दाखिल/प्रवेश होता था, तो उसके पास रिज्क़/जीविका पाता था, तो उसने कहा ऐ मरयम. तेरे पास ये कैसे आया उसने कहा कि ये अल्लाह/भगवान के नज़दीक से है। निश्चित ही अल्लाह/भगवान जिसको चाहता है बेहिसाब रिज्क़/जीविका देता है।

ال عِمْرِنَ ٣

ۮ۬ڸڰڡڹؙٲؽؙٵؚۼٲڬؽڹ ٷڿؽڔٳڵؽڬ ٷٵڪؙڹٛؾڶڮۿؚٟۀ ٳۮ۫ؽڵڨٷڹٵڨؙڵٳؽۿؙٷ ٵؿ۠ٷؠؙؽڬڡ۠ٛڮؠؙٛؽؠؙ ٷڵػؙڹٛؾڶڮۿؚؠٝٳۮ۬ؽڿٛؾۻؚۿٷڹ

فَتَقَبَّلُهَارَثُهَا بِقَبُوْلِ حَسَنِ وَانْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا لَا وَكَفَّلُمَا ذَكِرِيًا أَنْ وَجَدَعِنْكُ هَارِزُقًا أَنْ الْمِحَرابُ وَ وَكَالِمَا مُؤْمِنُ عَنْدِا اللهِ وَانَّا اللهَ يَرُزُقُ مَنْ يَشَاءُ إِنَّا اللهَ يَرُزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغُيْرِحِسَانِ ⊚ بِغُيْرِحِسَانِ

आल-ए-इमरान 3

45.जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरयम निश्चित ही अल्लाह/भगवान तुझे अपने पास से कलमे/शब्दों के साथ खुशख़बरी/शुभसूचना देता है, उसका नाम अल-मसीह ईसा इब्ने मरयम होगा, इस दुनिया में और आख़िरत/अंत में वजिह/प्रसिद्ध होगा और कुर्ब/निकटता रखने वालों में से होगा।

47.उसने कहा मेरे रब/पालनेवाले ये कि वह कैसे मेरे लिए बेटा होगा। और मुझे हरगिज़ बशर/व्यक्ति ने नहीं छुआ। कहा इसी तरह, अल्लाह/भगवान जो चाहता है खल्क/निर्माण करता है। जब अमर/आदेश पूरा हो जाता है बस निश्चित ही वह उसके लिए कहता है हो जा और वह हो गया।

ال عِمْزِنَ ٢

إِذْقَالَتِ الْمُلَاكِمَةُ اَمُرْئِمُ إِنَّ اللَّهُ يُكِثِّرُكِ رِكَادَةٍ مِنْهُ ﴿ اللَّهُ الْمُسِنِّحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَحِيْمًا فِي الدُّنْيَا وَالْاحِرَةِ وَمِنَ الْهُقَرِّبِيْنَ ۞

قَالَتُكُرِتِ ٱلْىٰ يَكُونُ لِىٰ وَلَكَ وَلَهُ يَمُسُسِٰنِىٰ بَشَكُّرُ قَالَكُنْ لِكِ اللهُ يَخْ لُقُ مَا يَشَاءُ ﴿ إِذَا قَطَى اَمُرًا فَاِنْمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيكُونُ ۞

बाइबिल के अनुसार, यहूदियों और इसाइयों के विश्वास

मर्यम ने फरिश्ते से कहा क्योंकर होगा जबिक मैं मर्द को नहीं जानती? और फरिश्ते ने जवाब में उससे कहा कि रूहुल मुकद्दस तुझ पर अवतरित होगा और खुदा ताला की कुदरत तुझ पर साया डालेगी और इस सबब से वह मौलूदे मुकद्दस खुदा का बेटा कहलाएगा।

अल-अहज़ाब 33

5.उनको उनके पिताओं के नाम
से पुकारो वह अल्लाह/भगवान
के नज़दीक ज़्यादा इन्साफ की
बात है, बस अगर तुम उनके
पिताओं को ना जानते हो बस
वह फैसले में तुम्हारे भाई और
तुम्हारे संरक्षक हैं। और हरगिज़
तुम्हारे ऊपर गुनाह नहीं अगर
तुम उसके साथ ग़लती से करते
हो और लेकिन जो तुमने अपने
दिली इरादे से कहा हो और
अल्लाह/भगवान बख्शने वाला,
रहम/दया करने वाला है।

अल-इसरा 17

85.और वह तुझसे रूह/सार/सारांश के बारे में सवाल करते हैं। कह दे कि रूह/सार/सारांश मेरे रब/पालनेवाले के आदेश से है। और तुम्हें इल्म/ज्ञान नहीं दिया गया सिवाय थोडा।

ٱلْاَحُزَابِ ٢٣

ٱۮٷۛۿؙؙؠؙٳۮ۬ۘٵڹۿؚؗؗؗؗؗؗۿۘۅؙٲڎ۫ڡۘڟؙۼڹ۫ۘۮٳۺ۠ۊۧ ڡؙٳٮؙٛڷؗۮڗۼڶٮٛٷٞٳٵؠٵۼۿؠؗٞ ڡؘٳڂۛۅٳٮؙػؙۮڣٵٮڔؽڹۅڡۅٳڸؽػڗؙ ۅؙڵؽۺۼڵؽڬؙۘۮؙؚڿٵڂۜڣؽؗٵٞٲڂٛڟٲٛڎؙۮؠٳ ۅؙڵڮڹٛ؆ڷڰؠؙۜۜۮٮٛٷ۠ڒؙڒڿؠٛٵ۞

اَلْاِسْراءِ ١٧

ۉؽؽؘڴۉۏڬػٸڹۘٵڵڗؖۅٛڿ ڡؙ۠ڸٵڵڗؙۅٛڂڝڹٛٵڡٛڔڒڔؚڮٚ ۅڡؙٵٛٷ۫ؾؽ۬ؿؙۯڞؚؽٵڵۘۼڶؙؚؠ ٳڵڒڡٞڶؽڶڒ؈

- 16.और किताब में मरयम को याद कर जब उसने अपने अहल/परिवार से शरक़ी/पूर्व स्थान पर अलहदगी इख़ितयार की।
- 17.बस उसने उनके अलावा हिजाब/परदा किया बस हमने उसकी तरफ अपनी रूह/सार सारांश भेजी बस वह ठीक-ठाक उसके लिए मिसले बशर/व्यक्ति थी।
- 18.उस(यानी मरयम) ने कहा
 निश्चित ही मैं तुझसे अपने
 रब/पालनेवाले की पनाह/शरण
 चाहती हूँ अगर तू परहेज़गार
 है।
- 19.उसने कहा निश्चित ही मैं तेरे रब/पालनेवाले का रसूल/सन्देशवाहक हूँ। ताकि तुझे एक न्यायोचित किया हुआ लड़का प्रदान करूँ।
- 20.उस(यानी मरयम) ने कहा मेरे यहाँ लड़का क्यों होगा जबकि मुझे किसी बशर/व्यक्ति ने छुआ तक नहीं। और ना ही मैं बदकार/ग़लत करने वाली हूँ।

هُرُکیِّمَ ۱۹

ۅؙٳۮ۬ٷٛڣٳڷڮؾ۬ۻڡۯؽۘڡٞۯ ٳڿٳڹٛۺؙؙؙۘڷؘڎؙ ؙؙؚۯڹٛٳۿڸؠٵڡڰٵڽٵۺۯۊؾٵ؈۠

ڡؘٲڠؙڬۯٮٛٞڡؚڹؙۮؙۏٝڹۿؚؠؗٛڔڿٵۘڹؖٵ ڡؙٲۯ۫ڛڶؽٵٳڷؽۿٵۯؙٷۛڂڬٵ ڡؙؿؖڲڶڷۿٵڹۺٞڗٳڛۅؾؖٳڛ

> قَالَتْ إِنِّنَ ٱعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ₪

قَالَ إِنَّهَاۤ ٱنَارَسُوۡلُ رُبِّكِ ۗ لِرَهُبُ لَكِ عُلْمًازُ كِيًّا ۞

قَالَتَ ٱلْى يَكُونُ لِى غُلْمُ وَّلَهُ بِينْسَسْنِي بَشَكُرٌ وَّلَهُ اَكُ بَغِيًّا ۞

21.उसने कहा ऐसा ही होगा तेरे रब/पालनेवाले ने कहा कि ये मुझ पर आसान है, और ताकि हम उस(यानी ईसा) को लोगों के लिए एक आयत/निशानी और अपने पास से रहमत/दया बना दें और ये अमर/आदेश पूरा हुआ।

अल-अंबिया 21

91.और उस(यानी मरयम) ने
अपनी शर्मगाह की हिफाज़त
की बस हमने उस(की
नफ्सयात/मनोविज्ञान) मैं
अपनी रूह/सार/सारांश फूंक
दी। और हमने उस(यानी
मरयम) को और उसके बेटे
(यानी ईसा) को जहाँ/संसार
वालों के लिए आयत/निशानी
बना दिया।

هُرُكِيمَ 19

قَالَكُنُ لِكَ قَالَ رُبُّكِ هُوعَكَّ هُرِّئَ وَلِنَجُعَلُكَ الْيُقَالِنَّاسِ وَرَحْمَهُ مِّنَّا وَكَانَ امْرًامَّ قَضِيًّا ﴿

اَلاَنْدِيمَاءِ ٢١

ۘۅۘۘٳڵڗؖؿٙٳۘڂۻڹؾؙڡٛڒڿۿ ڡؙٮؙڠڂ۬ڹٳڣؽۿٳڡڹڒ۠ۅٛڿڹٵ ۅؘڿۼڶڹۿٵۅٵڹٮٛۿٳٙ ٳؽڐٞڷؚڵڂڮؽڹ۞

अत-तहरीम 66

12.और इमरान की बेटी मरयम
जिसने अपनी शरम गाह की
हिफाज़त की। बस हमने उस
(यानी उसकी शरम गाह) में
अपनी रूह/सार/सारांश फूंक दी।
और उसने अपने रब/पालनेवाले
के कलिमात/शब्दों और उसकी
किताबों की पुष्टि की और वह
आज्ञापालन करने वालों में से

मरयम 19

22.बस उस(मरयम) ने उसको उठा लिया और उसके साथ एक दूर स्थान पर चली गई।

23.बस(पैदाइश का) दर्द उसको एक खजूर के पेड़ के तने तक ले आया। उसने कहा ऐ काश कि मैं इससे पहले ही मर गई होती। और भूली हुई हो गई होती।

اَلتَّخْرِيْمِ ٢٦

ۉؙۘۘؗۿۯؙؽۘۘۘؗۘۯٳڹؙٮٛػٷۿ۬ڔ۬ڹ ٳڷؾٞٵٛڂڞٮٛڬٛڡؙڒڿۿٳ ڡؙڡؙڂؙٮؘٵڣؽٶڡڹڗ۠ۅٛڿٮٵ ٷڝڰڨڬؠڲڶۭؠڵۻڗڒ؞ٙۿٵ ٷؙؿؙؿؚ؋ٷڰاٮؘٛؾ۬ ڡؚڹؙٳڵؙڟڹڗؽڹ۞ٞ

مُوْلَيْعَرَ ١٩

ڡؙۼؠؙڮؾٛۿ ڡؘٵڹٛؾڹۯٮٛڔؠ؋ڡؘػٲڹٞٵڡٞڝؚؾؖٵ

فَاجَآءُهَا الْهُخَاصُ الل جِذُعِ النَّخُلَةِ قَالَتُ لِلْيُتَنِي مِتُّ قَبْلُ هٰذَا وَكُنْتُ نَنْيًا تَنْسِيًّا ۞

24.और उस(यानी रूह/सार/सारांश) ने उसे उसके नीचे से पुकारा। कि तू ग़मज़दा/दुखी ना हो। वास्तव में तेरे रब/पालनेवाले ने तेरे नीचे सरैय्या/गुज़र बसर बना दिया।

25.और खजूर के पेड़ के तने को पकड़ कर अपनी तरफ हिला। तुझ पर ताज़ा पकी हुईं खजूरें गिरेंगीं।

26.बस खा(यानी पकी हुई खजूरें)
और पी(यानी जल स्त्रोत/झिर
से) और अपनी आँखों को ठंडा
कर और फिर अगर तू किसी
भी बशर/व्यक्ति को देखे बस
तू कह कि मैं रोज़ा/व्रत रहमान
के लिए वक्फ/अर्पित करती
हूँ। बस आज मैं किसी इंसान
से हरगिज़ बातचीत नहीं
करूँगी।

مُرْكِيمَ ١٩

ڣؙٵۮۿٳڡؚڹٛؿؙۼۿؖٳ ٵ**ؙڒ**ڰۼۯؽ ۊڽ۬ڿۼڶڒؠؙؖڮؚڰٛؾڮڛڔؾٳ؈

> ۅٛۿڒؚۜؽٙٳڶؽڮڮۭڿڶٛ؏ٳڵۼۜٛڂڷۊ ؿؙڶۊؚڟۘؗۼۘڵؽڮؚۯؙڟٵؘٜۘۘۼڹؾٵ۞ؗ

فَكُلِّ وَاشْرِنِ وَقِرِّىٰ عَيْنًا ۗ فَاقَاتُرِينَّ مِنَ الْبُشُرِ اَحَكُ الْا فَقُوْ لِنَّ الرَّحْمٰنِ صَوْمًا نَكُ رُتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَكُنْ أُكِلِّ وَالْيَوْمُ اِنْسِتًا ۚ

हज़रत ईसा की पैदाइश का स्थान और समय 1.जगह मक्का है। 2.मौसम गरमी का है।

27.बस वह उसको उठाए हुए

उसके साथ अपने क़ौम/समुदाय

के पास आई उन्होंने कहा ऐ

मरयम निश्चित ही तू घड़ी
हुई चीज़ के साथ आई।

28.ऐ हारून की बहन ना तो तेरा पिता बुरा आदमी था और ना ये कि वह तेरी माँ ग़लत थी।

هُرُكِيمَ ١٩

فَاتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَخْمِلُهُ قَالُوْ اِيْمُرْكِمُ لَقَدُ جِئْتِ شَيْعًا فِرِيًا ۞

يَاُخْتَ هٰرُوْنَ مَاكَانَ اَبُوْكِ امْرَ اَسُوْءٍ وَمَاكَانَتُ أُمُّكِ بَغِيًّا ﷺ

अन-नूर 24

11.निश्चित ही जिन लोगों ने
झूठा तोहमत/कलंक लगाया।
वह तुम ही मैं से एक
टोली/समूह है। तुम अपने
हक़/सच में इसको बुरा ना
समझो। बल्कि वह तुम्हारे
हक़ में बेहतर है। उनमें से हर
शख्स के ज़िम्मा/ऊपर उतना
ही गुनाह है जितना कि उसने
कमाया। और उनमें से जो
बड़ाई के साथ पलट गया
उसके लिए बड़ा अज़ाब है।

- 12.और जब तुमने उस(बदनामी)
 को सुना। (तो) मोमिन/विश्वासी
 मर्दों और मोमिन/विश्वासी
 औरतों ने अपने नफ्सों/मनोभावों
 में बेहतर अनुमान क्यों ना
 किया? और कहते, कि ये तो
 खुली बदनामी है।
- 13.क्यों ना वह उस(बदनामी) पर चार गवाह लाए। बस जब वह गवाह नहीं लाए तो निश्चित ही अल्लाह/भगवान के नज़दीक वहीं झूठे हैं।

اَلنُّورِ ٢٤

ٳػٳڷڒؽڹڮۘۘۘۘڮٳٷ ؠٳڵٳڡ۬ڮۘڠۻؠڎؖڡٞڹٛػؙۮ۠ ڔڬۿٷڿؽڒؖڷػڎؙ ؠػڸۜٳڡؙڔػۣڡڹٞؠؙٛۮ ڡٵڬۺٮؙڡڬڸۮؚڴڮۯڒ؇ڡڹؙٛۿ ۅٵڰڹؽؙؾٷڴ۬ڮڔٛڒ؇ڡڹٛڰۿ ڮڬػڶڮۼڟۣؽؗۯۨ

ۘۘۘۘٮٛۅٛڷۘۘٳۮ۬ٮۄۼۘڞؙٷٛؖٷ ڟؾۜٳڶؠٷ۫ڡؚڹؙٷؽٷٳڶٮٛٷٝڡؚڹ۬ؾٛ ڽٵٮ۬ڡؙٛڛۿؚڡ۫ڬؽڗۘٳ ٷۜۊٵڵٷٳۿڶڒؘ۩ٳڡٛ۬ڮ۠ۺ۠ؠؚؽڽٛ۫۫۫۫۫۫۫۫۫ڛ

ۘۘۘۘۘۅؙۯڬؚۘڲٵٷؙٛۘٷۘۘڲڲؽؚڮ ڽؚٲۯڹۼڿۺ۠ۿػٳۼٛ ڡؘٳڎ۬ڶڡۯؽٲٮٷٳڽٳۺ۠ۿػڵڔؙ ڡؘٵؙۅڵڵٳٟڰؘ؏ڹ۫ۘۘػٳڵڵڮۿؙۘۿؙٳڶػڶؚڔؠؙۅٛڹ

अन-नूर 24

14.और अगर दुनिया और
आखिरत/अंत में तुम पर
अल्लाह/भगवान का अनुग्रह
और उसकी दया ना होती तो
जिस बात को तुमने फैलाया
था तुम्हें जरूर बड़ा अज़ाब छू

15.जब तुम उस(बदनामी) को जिसका कि तुम्हें इल्म/ज्ञान नहीं हुआ अपनी ज़बानों और अपने मुंह से बयान करते हो और हिसाब करते हो कि वह अत्यन्त मामुली बात है। हालांकि अल्लाह/भगवान के नज़दीक वह बहुत बड़ी बात है।

اَلنُّوْرِ ٢٤

ۅؙۘۘڷٷڵٳڣۻؙڷٳڛۨۏۼڵؽؙػؽٛۅڒڂٛٛػؾؙٷ ڣٳڵڒؙڹٛؽٵۅٲڵڿؚڒۊ ڵؠۺػؙۮ؈ؘ۬ڡٵۘٲڡ۬ۻ۬ؾؙۯ۫ڣؽؚۅ ۼۘۮٳڣۜۼڟؚؽ۫ۄ۠۞ؖ

ٳۮ۬ؾۘۘػڨٷڹڬۑٳڵڛڹڗڮؙۄؙ ۅؾڠۛٷڵٷؽڽٳٷ۬ۅٳۿؚڮؙۄٛ ؆ڶؽڛٛػڰۿڔؠ؋ۼڵۿٷۛڲٛ؊ٷڹڬۿڽؚؚۜڹٵۥؖ ٷۿٷۼڹٛۮٳٮڵؙۼۼڂؚؽ۫ۄٛٛ

<u>बाइबिल के अनुसार यहूदियों और इसाइयों के विश्वास</u> यहन्ना 3:12

क्योंकि खुदा ने दुनिया से ऐसी मुहब्बत रखी कि उसने अपना इकलौता बेटा बख्श दिया कि जो कोई उस पर ईमान/विश्वास लाए हलाक ना हो बल्कि हमेशा की जिंदगी पाए। बाइबिल के अनुसार, यहूदियों और इसाइयों के विश्वास

लका 1:32,34,35

बुजुर्ग होगा और खुदा का बेटा कहलाएगा और खुदा बंद उसके बाप दाऊद का तख्त उसे देगा। मरयम ने फरिश्ते से कहा ये क्योंकर होगा जबिक मैंमर्द को नहीं जानती? और फरिश्ते ने जवाब में उससे कहा कि रूहुल मुकद्दस तुझ पर नाज़िल होगा और खुदा की कुदरत तुझ पर साया डालेगीऔर उसके सबब से वह मौलूदे मुकद्दस खुदा का बेटा कहलाएगा।

88.और वह कहते हैं अर-रहमान/ बहुत मेहरबान ने बेटा पकड़ रखा है।

89.वास्तव में तुम सख़्त चीज़ के साथ आये।

90.क़रीब है कि आसमान उससे फट जाएं ज़मीन टूट कर अलग-अलग हो जाए और पहाड़ गिरकर चूर-चूर हो जाएं।

91.ये कि वह रहमान/मेहरबान के लिए बेटा पुकारते हैं।

92.और रहमान/मेहरबान के लिए यह चाहत नहीं है कि वह बेटा पकड़े।

مَرْكِيرَ ١٩

وَقَالُوااتُّخُذَالرُّ ۖ خُنُ وَلَكَّالِهُ

لَقَالُ جِغْتُمُ نِتُنَيًّا إِدًّا إِنَّا اللَّهِ

ٮۜڰٵڋۘٳڶڝۜٙۿۅٝؾؙؾۘڡؘٛڟۮ؈ؘڡؚڹ۬ۘۘؖ ۅؾؙڹٛۺۊٞٛٵڷٳۯڞٛ ۘٷؾڿڗ۠ٳڮؚؠٵۘڷۿڰۘٵ۞

اَنْ دَعُوْ اللَّكُوْمِ إِن وَلَكُ اللَّهُ

ٷڡؘٳێ^ؽڹۼؽڶؚڶڗ۠ڂۻ ٲٮٛؾۜؿٞڿۮٷڶڰٲ۞

अन-निसा 4

156.और उनके कुफ्र/इनकार के साथ और उनका मरयम के ऊपर बड़े कलंक का कहना।

الدِسُاءِ ٤

ٷۜڔؚؚۘڝؙۢڣٝڔۿؠؗٷۊؘۅؙڶؚۿٟ؞ؙؚؚۘؗۼڵؽۘۘۘؗؗؗؗؗۘؗۯؽؚڡؘ ڔؙۿؾٵڽٵڿڂؽٵ۞ۨ

अन-नूर 24

16.और जब तुमने उस(बदनामी)
को सुना तो तुमने ये क्यों ना
कह दिया कि ये हमारे लिए
नहीं है कि उसकी बात करें।
तू पाक है, ये बड़ा कलंक है।

اَلنُّورِ ٢٤

ۘۅؙڵٷڵۘۘٙػٳۮٚڛػ۬ؿؙڰٷؙۘ ڠؙڵؿؙۮ۫ڰٵؽڰٷٮؙڬٵۜ ٲڹٛ؆ۛػڴڷۮؠۿڶٵ^ڿ ۺؙۼؙڹؙڰۿۮۜٲؠؙۿؾٵؽٞۼڟؚؽؙۄٞۛ

29.बस उस(मरयम) ने उसकी तरफ इशारा किया। उन्होंने कहा हम उससे जो गहवारे/पालना में है कैसे कलाम/बातचीत करें?

30.कहा निश्चित ही मैं
अल्लाह/भगवान का नौकर/बन्दा
हूँ मुझे किताब दी गई और
मुझे नबी/भविष्यवक्ता बनाया
गया।

33.और सलाम/सलामती हो मेरे
ऊपर उस दिन जब मैं पैदा
हुआ और(सलाम/सलामती हो)
उस दिन जब मैं मरंगा और
(सलाम/सलामती हो) उस दिन
जब मैं ज़िंदा नियुक्त किया
जाऊंगा।

مُوْلَيْهِرَ ١٩

ڡٚٵۺٵڔؾٙٳڮؽٝڋ ڡٞٵٮؙٷٳڲؽؙڡؘ*ٮؙڴٳڋ* ڡۜڹٛڰٳڹ؋ؚٵڵؙؠۿٙۮؚڝؘؠؾؖٳ؈

قَالَ إِنِّى عَبْدُ اللَّقِ اللَّهِ ال النفي الكِرناب وَجَعَلَمِي نَبِيًّا أَنِّ

ۅؘٳڶڛۜڵۄ۠ۼڮۜؽۅٛٙؗؗٞؠۅؙڶؚؗٛڵؾؙ ۅؘؽۅٛمٛٳؘمُؙۅٛؾؙۅؽۅٛمٞٲؙڹۛۼؿؙڂؾؖٳ؈

- 31.और जहाँ कहीं मैं हूँ मुझे सोभाग्यपूर्ण बनाया गया। और मुझे सलात/नमाज़/प्रार्थना के साथ और मुझे ज़कात/ न्यायकरण के साथ वसीयत की गई जब तक मैं ज़िन्दा हैं।
- 32.और मैं अपनी माँ के साथ नेकी करूँ और मुझे हरगिज़ सख्ती करने वाला नहीं बनाया गया।
- 14.और उसे(यानी याहया को)
 अपने माता-पिता के साथ
 नेकी करने वाला बनाया
 और उसे(यानी याहया को)
 हरगिज़ सख्ती करने वाला
 और पालन ना करने वाला
 नहीं बनाया।

आल-ए-इमरान 3

59.निश्चित ही अल्लाह/भगवान के नज़दीक ईसा की मिसाल ऐसी है जैसी मिसाल आदम की। उसने उसको मिट्टी से खलक़/निर्माण किया, फिर उससे कहा हो जा, बस वह हो गया।

هُرُكِيمَ ١٩

ۊؘۜٞٙٛۜٛڲۼۘڵڹؽؙڡؙٛڹڔؙڰٲؽؽٵڴؙڹٛؾؙ ۅٲۅٛۻٮڹؽؠٳڶڝۜڶۅۊۅؘڶڵڒۘڵۅۊ ۘٙڡٵۮؙؗٛٛٞڡٛؾؙػؾؖٵ۞

ۊۜۘٛٛڔؖڗٞٳڹۅٳڸۘۮڐؽؗ ۅؘڶۮڲۼڵڹؽ۬ڮؾۜٳڒٲۺؘڡؚؾؖٳ؈

ۊۜٛڹڗٞٳؠۅؘٳڶۘۘۘۘؽؠؗؖؖ ۘٷڵڡٝڒؙؽػؙڹٛڿڹۜٵڒٳۼڝؚؾۘٵۛ

ال ِعِمْرِنَ ٢

ٳڹؘؙؙۜٛٛٛڡؿؙۘڶۘ؏ؽؙٮؗ۬ؽۘۘۼڹؙۮۘۘٲ۩ڷٚڡؚ ػؙؿؙڶؚٳٳۮػڗ۠ ڂۘڵڡٞڎؙڡؚڹؙٛؿڒڮ ؿڴۊٵڶڮڮؙؽؙڣۘؽٷٛؽٷ؈

34.वह है ईसा इब्ने मरयम/मरयम का बेटा ईसा यही हक़ है जिसमें वह शक करते हैं।

مَرُ كَيْعَرَ 19

ۘۘؗؗؗؗؗؗۘؗؗڐڸڲۘٶؽؽؽٳڹٛؽؙۘۘۘڡۯؽۄۧ ڰٷڶٲڶۘڂؚقؚٞٵڷڒؚؽڣۣ۬ڮڲٛڷڒ۠ٷٮٛ

अल-मोमिनून 23

50.और हमने ईसा इब्ने मरयम/
मरयम के बेटे ईसा और उसकी
माँ को एक आयत/निशानी
बनाया। और हमने उन दोनों
को ठहरने के क़ाबिल जल
स्त्रोत/झिर वाली बुलन्द जगह
की तरफ पनाह/शरण दी।
(यानी उन दोनों के बारे में
सच्चाई जानना)

अल-माएदा 5

75.नहीं है अल-मसीह इब्ने

मरयम/मरयम का बेटा मसीह

सिवाय इसके कि एक

रसूल/सन्देशवाहक है उससे
पहले कई रसूल/सन्देशवाहक
गुजरे। और उसकी माँ सच्ची
है। वह दोनों खाना खाते थे।
ग़ौर करो कि हम उनके लिए
आयात/निशानियों को किस
तरह खोल कर बयान करते हैं
फिर ग़ौर करो कि वह कैसे
भटकते फिरते हैं।

ٱلْمُؤْمِنُونَ ٢٢

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيُمُ وَامِّنَةُ الْهِيَّةُ وَّاوَيْنَهُمَا الْيُرَبُوَةِ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ۚ

اَلْمَائِكُةِ ٥

مَاالْمُسِيْحُ ابْنُ، مُوْيَمُ الْأَرْسُوْكُ قَلْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِوالرَّسُلُ وَاُمُّهُ وَصِدِّ نِقَةٌ ۚ كَانَا يَا كُلُنِ الطَّعَامَ ۚ اُنْظُرُكِيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْأَيْتِ تُمَّا انْظُرُ اَنِّى يُؤْفَكُوْنَ ۞

अन-निसा ४

171.ऐ अहले किताब/किताब का परिवार अपने दीन/ फैसले में हद से ना बढ़ो. और अल्लाह/भगवान के विषय में सिवाय हक कोई बात ना कहो। निश्चित ही मसीह ईसा डब्ने मरयम/मरयम का बेटा ईसा मसीह अल्लाह/भगवान का रसल/सन्देशवाहक है। और उसका एक कलमा/शब्द है. जो उसने मरयम को प्रदान किया और उसके पास से रूह/सार/सारांश है। बस अल्लाह/भगवान और उसके रसलों/सन्देशवाहकों पर ईमान/ विश्वास ले आओ. और तीन मत कहो। अगर तम उससे बाज़ रहो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। निश्चित ही अल्लाह/भगवान डलाह/भगवान एक है। वह उससे पाक है कि उसका कोई बेटा हो, जो कुछ भी आसमानों और जमीन में है उसी का है.और अल्लाह/भगवान ही वकील काफी है।

اَلدِّسُكَاءِ ٤

बाइबिल के अनुसार इसाइयों के विश्वास यूहन्ना का दूसरा खत 5:7 और गवाही देंगे देने वाले तीन हैं बाप, और बेटा और रूह और ये तीनों एक ही बात पर मृतिफिक हैं।

महत्वपूर्ण बात मरयम के बारे में

*मरयम19:27,28

1.मरयम के क़ौम/समुदाय ने कहा कि वह घड़ी हुई चीज के साथ आई। 2.मरयम के माता पिता नेक थे।

*अन-निसा 4:186

1.अज़ीम बुहतान/बड़ा कलंक

<u>*लूक़ा 1:35</u>

1.रुहुल मुकद्दस तुझ पर अवतरित होगा।

महत्वपूर्ण बात ईसा के बारे में

***मरयम 19:88,92**

1.अल्लाह/भगवान ने बेटे को जन्म दिया।

<u>*यहन्ना 10:30</u>

1.मैं और मेरा बाप एक हैं।

<u>*यहन्ना 3:12</u>

1.उसने अपना इकलौता बेटा बख्श दिया।

<u>∗लुका 1:32</u>

1.ख्दा का बेटा कहलाएगा।

प्रश्न और उत्तर

अर-रअद 13

38.और निश्चित हमने तुझसे
पहले रस्लों/सन्देशवाहकों को
भेजा और हमने उन सब के
लिए पत्नियाँ और संतान
बनाई। और ये रस्ल/सन्देशवाहक
के लिए नहीं है कि वह
आयत/निशानी के साथ आए
सिवाय उसके अल्लाह/भगवान
की इजाज़त के साथ हर
निर्धारित मुद्दत/अविध के
लिए किताब है।

اَلٰرِّعُدِ ١٣

وَلَقَدُ ارْسِلْنَارُسُلَا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَالَهُمْ ازْواجًا وَدُرِّيَةً وَمَا كَانَ لِرَسُولُ انْ يَاٰتِي بِالْيَةِ الْكَرِادُنِ اللهِ الْكِرادُنِ اللهِ الْكِرادُنِ اللهِ مَّالِكَةً

प्रश्न-1.बाइबिल से हमें इस बात का पता चलता है कि हज़रत ईसा की शादी नहीं हुई थी। तो फिर आगे उनकी जुरीयत/बंश कैसे चली/चला?

अत-तहरीम 66

10.अल्लाह/भगवान एक मिसाल से कुफ्र/इनकार करने वालों के लिए प्रहार लगाता है नूह की पत्नी की और लूत की पत्नी की। दोनों हमारे बन्दों के नीचे/अधीन थीं। जो हमारे सही करने वाले बन्दे/नौकर थे। बस दोनों ने बेईमानी की। बस हरगिज़ उन दोनों को अल्लाह/भगवान से कोई चीज़ फ़ायदा ना कर सकी। और दोनों से कहा गया कि दोनों आग में प्रवेश होने वालों के साथ प्रवेश हो जाओ।

اَلتَّحْرِيْمِ ٢٦

ضَرَبَ اللهُ مَثَلًا لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَرَاتَ نُوْجِ قَالْمَرَاتَ لُوْطٍ كَانَتَا يَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَ يُنِ فَكَذَرُيغُنِياعَنُهُ مَامِنَ اللهِ شَيْطًا فَكَذَرُيغُنِياعَنُهُ مَامِنَ اللهِ شَيْطًا وَقِيْلَ ادْخُلا النَّارَمَعَ اللَّ خِلِيْنَ

प्रश्न-2.कुरआनी आयत में इस बात से संबंधित ज़्यादा क्या सबूत हैं कि हज़रत ईसा के पिता नहीं थे?

आगे जारी है....

अत-तहरीम 66

11.अल्लाह/भगवान एक मिसाल से ईमान वालों/विश्वासियों के लिए प्रहार लगाता है, फ़िरऔन की पत्नी की जब उसने कहा ऐ मेरे रब/पालनेवाले मेरे लिए जन्नत/स्वर्ग में अपने नज़दीक एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन और उसके कर्म से मुक्ति दे और मुझे ज़ालिम क़ौम/समुदाय से मुक्ति दे।

12.और इमरान की बेटी मरयम
जिसने अपनी शर्मगाह की
हिफाज़त की। बस हमने उस
(यानी उसकी शर्मगाह) में
अपनी रूह/सार/सारांश फूंक
दिया। और उसने अपने
रब/पालनेवाले के
कलिमात/शब्दों और उसकी
किताबों की पुष्टि की।
और वह आज्ञापालन करने
वालों में से थी।

ٱلتَّحْرِيْمِ ٢٦

ٷۻڔؙۘڔۘٵڵڷٷۘۘٛؗٛٛڡؿؙڵڴ ڷٟڰڔؙؖؽڹٵڡڹؙۅٳ ٳۮ۫ۊؙٲڵؿؙڔڿٳڹڹڶؚۣڶۣۼڹ۫ۮڮ ؠؽؙٵڣٵػؚؾؙؖۊ ٷڿۜڹؽؙڡڹٛڣۯۘۼۅٛڽؘٶۼڸؚڡ ٷڿۜڹؽؙڡڹ ٵڵ۫ڡۜۊ۫ڡڔٳڵڟڸؚؠؽڹ۞ۨ

وَمُرُيَّمُ ابْنَتَ عِمْرِنَ الْتِّيَّ اَحْصَنَتُ فَرْجَهَا فَنُفُخُنَا فِيُهِ مِنْ رُّ وُحِنَ وَصَدَّ قَتْ بِكَالِمْتِ رَبِّهَا وَكُنْهُ وَكَانَتُ مِنَ الْقَانِتِيْنَ شَ

अन-नूर 24

11.निश्चित ही जिन लोगों ने
झूठा तोहमत/कलंक लगाया।
वह तुम ही मैं से एक
टोली/समूह है। तुम अपने
हक़/सच में इसको बुरा ना
समझो। बल्कि वह तुम्हारे
हक़/सच में बेहतर है। उनमें
से हर शख्स के ज़िम्मा/ऊपर
उतना ही गुनाह है जितना
कि उसने कमाया। और उनमें
से जो बड़ाई के साथ पलट
गया उसके लिए बड़ा
अजाब है।

12.और जब तुमने उस(बदनामी)
को सुना। (तो) मोमिन/विश्वासी
मदों और मोमिन/विश्वासी
औरतों ने अपने नफ्सों/मनोभावों
में बेहतर अनुमान क्यों ना
किया? और कहते, कि ये तो
खुली बदनामी है।

اَلنُّوْرِ ٢٤

ٳػٳڷڒؠؽڹڮٵٷٛ ڽٳڵٳڣ۬ڮۼۻڹڐؙۺٞڬٛۄٝ ڮػۺڹٛٷڰۺؙڒؖٳڰۿؙ ڽػڸۜٳڡؙڔؠؙۣڝٙٚڹٛڰٛ ڡٵػۺۘڹۘڡۭڬٳڴڮۯ ٷٳڷۮؚؽؙؾٷڴڮڔٛٷۿۄڹٛڰٛ ڮڬٵڣۼڂۣؽؗۄٛ

ۘۘۘۘۘۘۘڵۅٛٙڵۘۘٳۮ۬ڛۼۛڞؙٷٷ ڟڽۜٵڶٮٷ۫ڝڹؙۏڹٷٳڶٮٮٷٛڝؚڶ۬ؖ ڽٵٮؘڡٛٛڛۿؚۄ۬ڂؘؿڒٵ ٷۘۘٵڶٷٳۿڶۯۜٳڣٛڮڞؠؽڽٛ۫۫۫۫۫

प्रश्न-3.आज का लेक्चर सुनने के बाद इस बात का इल्म/ज्ञान हुआ कि स्रह न्र 24:11-16 में जिस बड़े कलंक के बारे में आया हुआ है। उसका संबंध हज़रत मरयम से है, जबिक तमाम उलमा का इस बात पर सहमत है कि ये बड़ा कलंक हज़रत आयशा से संबंधित है, इसका स्पष्टीकरण करें?

आगे जारी है....

अन-नूर 24

13.क्यों ना वह उस(बदनामी) पर
चार गवाह लाए। बस जब वह
गवाह नहीं लाए तो निश्चित
ही अल्लाह/भगवान के नज़दीक
वहीं झूठे हैं।

जिल्लाह अल्लाह/भगवान के नज़दीक
चहीं झूठे हैं।

14.और अगर दुनिया व
आखिरत/अंत में तुम पर
अल्लाह/भगवान का अनुग्रह
और उसकी दया ना होती तो
जिस बात को तुमने फैलाया
था तुम्हैं जरूर बड़ा अज़ाब छू

15.जब तुम उस(बदनामी) को
जिसका कि तुम्हें इल्म/ज्ञान
नहीं हुआ अपनी जबानों और
अपने मुंह से बयान करते
हो और हिसाब करते हो कि उर्देव वह अत्यन्त मामुली बात है। हालांकि अल्लाह/भगवान के नज़दीक वह बहुत बड़ी बात

लेती।

है।

16.और जब तुमने उस(बदनामी)
को सुना तो तुमने ये क्यों ना
कह दिया कि ये हमारे लिए
नहीं है कि उसकी बात करें।
तू पाक है, ये बड़ा कलंक है।

ٳۮ۬ؾػڡٞٞٷ۬ڬٷؠؚٳؙڵڛؚڹؾڮؙۯ ۅۘؾڠٷ۠ٷٷڹٵڣؖٷٳۿڮۯ ؆ڶؽڛٛػػؙؗؗؗٛؗؗؗؗۄڽ؋ۼڶۿٷۜؿڂٛڛڹؙٷ۬ڹڬۿێؚڹٵ ۊۿٷۼڹ۫ۮٳۺ۠ٚ؋ؚۼڂؚؽؗۄ۠ٛ

> ۘۅؘڷٷڵۘۘۘٳۮ۬ڛۘٷؿؙٷٷ ڠؙڶؾؙۮ۫ڡۜٞٳؽٷؙڽؙڶڹؘٛٲ ٲڹٛ؆ٞؾػڵۮؠۿڶٲ ۺؙۼ۬ڹڰۿۮؙۜٳڹۿؾٵٮؓۼڟؚؽۄٞؗ

अल-कुरआन क्या कहता है

मुहम्मद शेख के बारे मे

- 01. रेहान अल्लाहवाला द्वारा महम्मद शेख का इंटरव्यू (2011)
- 02. अहमद दीदात द्वारा वैश्विक छात्रों का दावा प्रशिक्षण, IPCI डरबन SA (1988)
- 03. मुहम्मद शेख का कुरआन से मार्गदर्शन का सफ़र ? (2010)
- 04. महम्मद शेख पर जानलेवा हमला (2005)
- 05. महम्मद शेख की जबल-ए-न्र की यात्रा (2006)
- 06. महम्मद शेख दवारा किया गया हज (2006)
- 07. महम्मद शेख दवारा किया गया उमरा (2006)
- 08.महम्मद शेख दवारा खतम-ए-क़रआन की दआ (2005 के बाद)

बहस

- 11. महम्मद शेख की इस्माईली डॉक्टर से बहस। (1989) (उर्द)
- 12. प्रश्नोत्तर: मुहम्मद शेख और पत्रकार (2008) (उर्दू)
- 13. मुहम्मद शेख की परवेज़ी को मानने वालो से बहस (2013) (उर्द)
- 14. मुहम्मद शेख की दो सोमाली इमामों से बहस(अंग्रेजी) (2013)
- 15. महम्मद शेख की पादरी जेफ़री राइट से बहस (2013) (अंग्रेजी)
- 16. प्रश्नोत्तर : महम्मद शेख और अमेरिकी लोग (2013)(अंग्रेजी)
- 17. प्रश्नोत्तर : मुहम्मद शेख और कनाडा के लोग (2013)(अंग्रेजी)
- 18. मुहम्मद शेख की कनाडा में अहमदी मुस्लिमो से बहस(2013)(अंग्रेजी)
- 19. महम्मद शेख की मुफ्ती अब्दल बाक़ी से बहस (2016) (उर्दू)
- 20. महम्मद शेख ने दुबई के लोगों को आमंत्रित किया (2018)(अंग्रेजी)

अपने भगवान को पहचानें

- 21. अल-क़्रआन क्या कहता है भगवान और भगवानों के बारे में(2011)
- 22. अल-कुरआन क्या कहता है शैतान/इब्लीस के बारे में(2004)

चुने गए व्यक्तित्व

- 23. इब्राहिम का ख़्वाब(PBUH) (2011))
- 24. मुसा की किताब(PBUH) (2011)
- 25. मरयम (PBUH)(2009)
- 26. क्या मरियम अल मसीह ईसा की एकमात्र माता-पिता हैं?(PBUH) (2013)(अंग्रेजी)
- 27. अल मसीह ईसा इब्ने मर्यम(PBUH) (2006)
- 28. अल मसीह ईसा की भविष्यवाणियाँ उनके जीवन और मृत्यु के बारे में। (2013)(अंग्रेजी)
- 29. महम्मद (PBUH) (2002)
- 30. मूसा का पहाड़ (PBUH) (2017)

अल्लाह / भगवान की किताब

- 31. अल -किताब (2011)
- 32. अल-क कुरआन(1991, 2008)
- 33. अल्लाह/भगवान की किताब (2017)(अंग्रेजी)
- 34. क्या क्रआन अल्लाह / भगवान का कलाम/शब्द है?
- 35. तोरात और इंजील (2007)(2011)
- 36. जब्र (2008)
- 37. हदीस (2005)
- 38. सुन्नत (2004)
- 39. हिकमत (2008)
- 40. रूह (2008)
- 41. जवाने/भाषाएं (2008)
- 42. हिदायत /मार्गदर्शन (2009)

वक्ता मुहम्मद शेख के द्वारा

अपनी पहचान/खुद को जानें

- 51. मस्लिम (1991, 2004)
- 52. अहले किताब (किताब के लोग) (2006)
- 53. बनी इसराईल (इसराईल के बेटे) (2003, 2011)
- 54. औलिया/रक्षक) (2011)
- 55. खलीफा/उत्तराधिकारी (2013)
- 56 इमाम (2013)
- 57. फिरके/संप्रदाय
- 58. मुनाफिक
- 59. यह्दी और ईसाई (2008)
- 60. अल्लाह बशर/इंसान से कैसे कलाम/बात करता है? (2019)

पारिवारिक जीवन

- 61. हिजाब/पर्दा (2011)
- 62. निकाह/विवाह (2009)
- 63. मिया बीवी/पति- पत्नी के संबंध (2011)
- 64. फाहिशा/अश्लीलता (2008)
- 65. तलाक (2009)
- 66. माता-पिता और बच्चो का संबंध (2010)

पैसे को कैसे संभानें

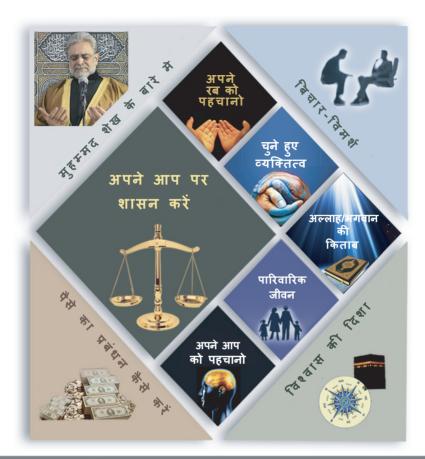
- 71. सदका और जकात/दान पुण्य (2006)
- 72. रिबा/बढ़ोतरी (2006)
- 73 विरासत

विश्वास की दिशा

- 81. इस्लाम और म्स्लिम (पाकिस्तान अमेरिकी सांस्कृतिक केंद्र) (1991) (अंग्रेजी)
- 82. इस्लाम (2004)
- 83. इबराहीम का मजहब/धर्म (PBUH) (2010)
- 84. सीधा रास्ता (2013)
- 85. सिफारिश (2010)
- 86. कावा और क़िब्ला (2007)
- 87. मस्जिद (2013)
- 88. सलाह/प्रार्थना (2011)
- 89. महतर्म महीने/वर्जित महीने (2006)
- 90. रोजा/व्रत (2008)
- 91. उमरा और हज (2013)
- 92. उम्म-उल-क्रा/शहरों की मां (2019)

हुकुम वाली आयात से अपने आप को नियंत्रित करे

- 101. जिहाद/संघर्ष (2006)
- 102. कत्ल/शारीरिक हत्या (2005)
- 103. नफसियाती कत्ल/मनोवैज्ञानिक हत्या (2010)
- 104. देहशतगरदी/आतंकवाद (2006)
- 105. जंग/युद्ध (2006)
- 106. किसास/बदल (2012)
- 107. नफसियाती जख्मों की तसल्ली/मानसिक दर्द की तसल्ली (2012)
- 108. अखलाक/अच्छा व्यवहार



(अ|| PC • एक गैर-लाभकारी धर्मार्थ संगठन है जो जरूरतमंदों, अनाथों, गरीबों और बेघरों की मदद करने में व्यस्त है, चाहे उनका धर्म और रंग कुछ भी हो। अंसाररुल्लाह / अल्लाह के सहायक बनने के लिए हमारे साथ हाथ मिलाएं, स्वयंसेवक बनें और दावा के हमारे मिशन का समर्थन करें, यानी दुनिया की जनता के लिए अल-इस्लाम का निमंत्रण। अल्लाह आपको पुरस्कृत करें और इस दुनिया में और उसके बाद (आमीन) आपकी उदारता के लिए आशीर्वाद दे।

दान करे ओर संपर्क करे :www.iipccanada.com/donate/

